



# पन्त प्रसार सन्देश

(प्रसार शिक्षा निदेशालय की त्रैमासिक समाचार पत्रिका)

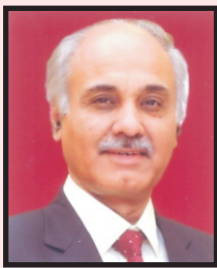
गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पन्तनगर-263 145, ऊधमसिंह नगर, उत्तराखण्ड

संरक्षक: डा. जे० कुमार, कुलपति

मुख्य सम्पादक: डा. वाई. पी. एस. डबास, निदेशक प्रसार शिक्षा

सम्पादक: डा. जितेन्द्र सिंह, पोस्ट डाक्टरल फेलो एवं ई. अनिल कुमार, सह निदेशक (कृषि अभियन्त्रण)

## कुलपति संदेश



‘पन्त प्रसार सन्देश’ पत्रिका का जुलाई-सितम्बर, 2016 (वर्ष 11:3) अंक आपके हाथों में है। वैज्ञानिकों द्वारा किए गए शोध निष्कर्षों को जन-जन तक पहुंचाने में प्रसार शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान है। कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा आयोजित विभिन्न गतिविधियों जैसे प्रशिक्षणों, अग्रिम पंक्ति प्रदर्शनों इत्यादि द्वारा प्रदेश के सुदूरवर्ती क्षेत्रों में कृषक, कृषक महिलाएं एवं युवक तकनीकी अर्जित कर आजीविका एवं स्वरोजगार के क्षेत्र में आशातीत वृद्धि करने में सफल होंगे। इस पत्रिका द्वारा पन्तनगर विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा की गतिविधियों को आप तक पहुंचा कर हमें प्रसन्नता हो रही है। मुझे विश्वास है कि यह पत्रिका प्रसार कार्यों को और अधिक गतिशील बनाने में सहभागी होगी।

शुभकामनाएँ।

  
(जे० कुमार)  
कुलपति

## कृषि विज्ञान केन्द्रों की गतिविधियाँ कृषि विज्ञान केन्द्र, ढकरानी (देहरादून)

- केन्द्र द्वारा खरीफ 2016 में टमाटर, धान, बैंगन, मिर्च, कुक्कुट पालन, गृह वाटिका विषय पर 140 प्रदर्शनों का आयोजन 15 है. क्षेत्रफल में किया



बैंगन छेदक कीट

गया। टमाटर के प्रदर्शन में फल छेदक कीट एवं बैंगन के शाख एवं फल छेदक कीट के प्रबन्धन हेतु कोराजेन कीटनाशक की एक मिली. मात्रा तीन लीटर पानी में घोल बनाकर 15 दिनों के अन्तराल पर तीन छिड़काव से इस कीट का प्रबन्धन हो गया। टमाटर की फसल में पछेती झुलसा के प्रबन्धन हेतु करजेट फफूंदनाशक की दो ग्राम मात्रा प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर आवश्यकतानुसार छिड़काव करने से इस बीमारी के प्रबन्धन में सफलता मिली।

- केन्द्र द्वारा जलागम के सहयोग से कालसी विकासखण्ड के व्यासभूड़ गांव में टमाटर की सक्षम, दीपांकर, सेशाद्री एवं अविरल हाईब्रिड के 20 प्रदर्शन लगभग 02 है. क्षेत्रफल में सितम्बर 2016 में आयोजित किये गये। इन प्रदर्शनों के आयोजन में प्लास्टिक मल्व का प्रयोग किया गया। इस तकनीक के प्रयोग का लाभ यह है कि टमाटर की फसल में खरपतवार का प्रबन्धन हो जाता है, पौधों की बढ़वार समुचित ढंग से होती है तथा सर्दी के मौसम में तापक्रम कम होने के कारण फसल की बढ़वार के साथ-साथ फूलों का खिलना एवं फल का विकास होता रहता है।
- केन्द्र द्वारा विगत त्रैमास में देहरादून के सहसपुर, विकासनगर एवं डोईवाला विकासखण्डों के लगभग 300 किसानों को आम में घुण्डी कीट

के प्रबन्धन विषय पर प्रशिक्षण दिया गया। इन प्रशिक्षणों का आयोजन अगस्त माह में केन्द्र द्वारा आम में घुण्डी कीट



आम में घुण्डी कीट का प्रकोप

नियन्त्रण अभियान के अन्तर्गत किया गया। अगस्त-सितम्बर 2016 में देहरादून जनपद के किसानों द्वारा लगभग 2000 है. से अधिक क्षेत्रफल में आम में घुण्डी कीट के प्रबन्धन हेतु संस्तुत कीटनाशकों का दो छिड़काव किया गया, जिससे इस विनाशकारी कीट के प्रबन्धन में 90 प्रतिशत से अधिक सफलता मिली है।

- केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा विगत त्रैमास में जनपद के विभिन्न क्षेत्रों में 37 प्रशिक्षणों का आयोजन विभिन्न विषयों पर किया गया, जिसमें 780 किसानों को

लाभान्वित किया गया। इस के अतिरिक्त खारी फसल उत्पादन, सब्जी



प्रशिक्षण के दौरान कृषकों को जानकारी देते हुए वैज्ञानिक

उत्पादन, नाशीजीव प्रबन्धन, पोषण प्रबन्धन, पशुपालन, कुक्कुट पालन, गृह वाटिका विषय पर देहरादून दूरदर्शन द्वारा 12 टी.वी. रिकार्डिंग की गयी। जबकि केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा दो रेडियो वार्ता दी गयी। केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा कृषक प्रक्षेत्रों पर 116 भ्रमण कर 1361 किसानों की समस्याओं का समाधान किया गया। केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा विभिन्न विभागों द्वारा आयोजित 09 कृषक गोष्ठियों में प्रतिभाग कर लगभग 888 किसानों को विभिन्न विषयों से सम्बन्धित तकनीकी जानकारी दी गयी। केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा किये जा रहे प्रसार कार्यों पर आधारित कार्यक्रमों को 5 बार समाचार पत्रों में प्रकाशित किया गया।

- केन्द्र के प्रक्षेत्र पर दलहन उत्पादन को बढ़ावा देने हेतु अरहर की यू.पी.ए. एस.-120 एवं उर्द की पन्त उर्द-31 का बीजोत्पादन कार्यक्रम क्रमशः 1 एवं 2 है. में किया जा रहा है। इस बीज उत्पादन कार्यक्रम का आयोजन अनुसंधान निदेशालय, पन्तनगर के मार्गदर्शन में किया जा रहा है।

- अदरक में प्रकन्द गलन बीमारी के प्रबन्धन हेतु किसानों को कापरआक्सीक्लोराइड फफूँदनाशक के 3 ग्राम मात्रा प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर पौधों की जड़ों में छिड़काव करने की सलाह दी गयी। इस फफूँदनाशक के दो-तीन छिड़काव से प्रकन्द गलन बीमारी के प्रबन्धन में लगभग 80-90 प्रतिशत तक सफलता मिली। देहरादून के कालसी, चकराता, विकासनगर एवं सहसपुर विकासखण्डों में अदरक की खेती

व्यावसायिक रूप से की जाती है। लेकिन अगस्त-सितम्बर माह में वातावरण में आर्द्रता अधिक होने के कारण प्रकन्द गलन बीमारी का प्रकोप अधिक होता है।

- टी.एस.पी. परियोजना के अन्तर्गत केन्द्र द्वारा एन.एच.आर.डी.एफ. क्षेत्रीय केन्द्र करनाल से 15.20 कु. लहसुन की एग्रीफाउण्ड पार्वती प्रजाति क्रय की गयी। लहसुन की इस प्रजाति के प्रदर्शनों का आयोजन जनपद के चकराता एवं कालसी विकासखण्ड के चयनित जनजातीय गांव में किया जा रहा है।

## कृषि विज्ञान केन्द्र, मटेला (अल्मोड़ा)

- केन्द्र द्वारा विगत त्रैमास में कृषक, ग्रामीण युवाओं एवं प्रसार कार्यकर्ताओं हेतु 39 प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया, जिसमें 729 प्रशिक्षणार्थियों द्वारा प्रतिभाग किया गया।

- निदेशक प्रसार शिक्षा, गो.ब. पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पन्तनगर, डा. वाई.पी.एस. डबास की अध्यक्षता में 04 अगस्त, 2016 को वैज्ञानिक सलाहकार समिति की तेरहवीं बैठक आयोजित की गई। इस बैठक में गो.ब. पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय के डा. एस.पी. उनियाल, प्राध्यापक, सब्जी विज्ञान विभाग; डा. जे.एल. सिंह, प्राध्यापक, पशु औषधि विज्ञान; डा. बी.एस. कार्की, प्राध्यापक, सस्य विज्ञान, विभिन्न रेखीय विभागों, वैज्ञानिक सलाहकार समिति के सदस्यों एवं केन्द्र के वैज्ञानिक उपस्थित थे।

- केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा विगत त्रैमास में 62 कृषकों के प्रक्षेत्र पर भ्रमण किया गया, जिसमें 1042 कृषकों को आवश्यक जानकारी उपलब्ध कराई गयी एवं समस्याओं का निराकरण भी किया गया। जुलाई-सितम्बर, 2016 में विभिन्न स्थानीय एवं राज्य स्तरीय समाचार पत्रों में 04 कृषि कार्यों की न्यूज प्रकाशित की जा चुकी है।

- केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा 04 तकनीकी लेखों का प्रकाशन विभिन्न पत्रिकाओं में किया गया। केन्द्र द्वारा सितम्बर 24, 2016 को विवेकानन्द पर्वतीय अनुसंधान संस्थान हवालबाग, अल्मोड़ा में आयोजित किसान मेले में केन्द्र द्वारा संचालित की जा रही गतिविधियों का स्टाल लगाकर तकनीकियों को प्रदर्शित किया गया, जिसमें लगभग 432 कृषकों द्वारा प्रतिभाग किया गया।

- केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा विभिन्न विषयों पर 21 कृषक गोष्ठी में प्रतिभाग किया गया, जिसमें 1091 कृषकों द्वारा प्रतिभाग किया गया एवं कृषकों की

समस्याओं का मौके पर ही निदान भी किया गया साथ ही केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा अंगीकृत ग्रामों में 04 डायग्नोस्टिक भ्रमण कर



प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन

कृषकों की प्रक्षेत्र में होने वाली समस्याओं का समाधान किया गया, जिसमें 119 कृषक सम्मिलित हुए।

## कृषि विज्ञान केन्द्र, धनौरी (हरिद्वार)

- केन्द्र द्वारा विगत त्रैमास में कुल 15 प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया, जिसमें जनपद के 289 कृषकों को कृषि एवं सम्बन्धित विषयों पर तकनीकी रूप से सुदृढ़ किया गया।
- केन्द्र द्वारा अग्रिम पंक्ति प्रदर्शनों में 102 तथा प्रक्षेत्र परीक्षणों 25 प्रक्षेत्रों पर कृषि, सब्जी विषयक परीक्षणों का आयोजन किया गया।
- स्वच्छ भारत अभियान के अन्तर्गत केन्द्र द्वारा ग्राम-मूलदासपुर माजरा, दौलतपुर व कोटामुरादनगर में जागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इसमें ग्रामीणों एवं बच्चों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।
- केन्द्र के तत्वाधान में जुलाई 28, 2016 को वैज्ञानिक सलाहकार समिति का आयोजन किया गया। इसमें रेखीय विभागों के अधिकारियों, कृषकों एवं कृषक महिलाओं ने प्रतिभाग किया। इसमें केन्द्र द्वारा विगत वर्ष में किये गये प्रसार कार्यक्रमों की समीक्षा की गई और आगामी वित्तीय वर्ष में केन्द्र द्वारा प्रस्तावित कार्यक्रमों पर विस्तृत चर्चा की गई। इसमें जनपद में समगतिशील टिकाऊ खेती और कृषि विविधिकरण पर जोर दिया गया।

- केन्द्र के तत्वाधान में अगस्त 16 से 22, 2016 तक गाजर घास उन्मूलन सप्ताह मनाया गया। इसमें केन्द्र के आसपास के ग्रामों से कृषकों को गाजर घास के विषय में जागरूक किया गया। कार्यक्रम में गाजर घास से होने वाली हानि तथा उसके उन्मूलन के उपायों पर चर्चा की गई।



गाजर घास उन्मूलन सप्ताह का आयोजन

## कृषि विज्ञान केन्द्र, गैना एंचोली (पिथौरागढ़)

- केन्द्र के सभागार में अगस्त 11, 2016 को 'वैज्ञानिक सलाहकार समिति' की तेरहवीं बैठक का आयोजन किया गया। बैठक की अध्यक्षता डा. वाई. पी.एस. डबास, निदेशक प्रसार शिक्षा गो.ब. पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पंतनगर की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। बैठक में श्री आशीष चौहान, मुख्य विकास अधिकारी, पिथौरागढ़; डा. अभय सक्सेना, मुख्य कृषि अधिकारी, पिथौरागढ़; डा. मीनाक्षी जोशी, जिला उद्यान अधिकारी, पिथौरागढ़; श्री एस.एस. साही, सह-निदेशक मत्स्य, पिथौरागढ़; डा. मनोज राघव, प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, सब्जी विज्ञान विभाग, पन्तनगर; डा. आर.एन. राम, संयुक्त निदेशक शोध, पन्तनगर; डा. बी.एस. कार्की, प्राध्यापक (सस्य), पन्तनगर एवं डा. पी.सी. पाण्डेय, प्राध्यापक सस्य, पन्तनगर ने प्रतिभाग किया। बैठक में प्रभारी अधिकारी, डा. जितेन्द्र क्वात्रा ने अक्टूबर-2015 से जुलाई-2016 की प्रगति आख्या एवं अगस्त-2016 से मार्च-2017 की वार्षिक कार्ययोजना प्रस्तुत की। बैठक में केन्द्र के सभी वैज्ञानिकों द्वारा प्रगति आख्या एवं आगामी वर्ष की कार्ययोजना के संबंध में विस्तृत चर्चा की गयी। प्रगतिशील कृषक श्रीमती

सावित्री खड़ायत, ग्राम-रयासी; श्रीमती रेखा भण्डारी, ग्राम-जजुराली; श्री संजय पाण्डे, ग्राम-खड़कीनी; श्री जे.सी. पाण्डे, ग्राम-खड़कीनी एवं श्री दीपक जोशी, ग्राम-कनालीछीना ने भी कृषि संबंधित समस्याएं रखी। बैठक में जिले के रेखीय विभागों के प्रतिनिधियों द्वारा भी सुझाव रखे गये।

- केन्द्र के गैना एवं एंचोली प्रक्षेत्र पर संचालित विभिन्न परियोजनाओं के अंतर्गत फल एवं सब्जी पौध उत्पादन हेतु 03 पॉलीहाउस एवं 01 शेडनेट का निर्माण किया गया है। इनमें उन्नतशील प्रजातियों को उगाकर कृषकों को पतागाभी, टमाटर, शिमला मिर्च, प्याज के 13,500 पौध एवं स्ट्राबेरी के 3250 पौध कृषकों को विक्रय किए गए हैं।



पॉलीहाउस में सब्जी पौध उत्पादन

- मशरूम उत्पादन को जिले में स्वरोजगार के रूप में बढ़ावा देने के उद्देश्य से केन्द्र पर नाबार्ड के सहयोग से एक मशरूम प्रदर्शन इकाई का निर्माण किया जाना है। इस योजना के अन्तर्गत संस्था द्वारा रु. 10 लाख उपलब्ध कराये गये हैं। इस परियोजना में स्पान निर्माण हेतु विभिन्न उपकरणों के क्रय की प्रक्रिया प्रगति पर है।
- केन्द्र के प्रक्षेत्र पर 675 शीतकालीन फल वृक्षों जैसे अखरोट, खुबानी, बादाम, आड़ू, नैक्ट्रीन, कीवी, नाशपाती, प्लम आदि का रोपण किया गया है। पूर्व में केन्द्र पर फलवृक्षों की सिंचाई हेतु उचित व्यवस्था नहीं थी। इसी के दृष्टिगत केन्द्र पर दो 40 हजार लीटर की क्षमता वाले कुँओं का निर्माण किया गया है। इन कुँओं से लगभग पूरे प्रक्षेत्र को ड्रिप सिंचाई के माध्यम से जोड़ दिया गया है। केन्द्र पर नवरोपित फल-वृक्षों, मातृ वृक्षों एवं सब्जी पौध की नर्सरी आदि में सिंचाई की व्यवस्था हेतु ड्रिप द्वारा सिंचाई की व्यवस्था की गयी है। इसके अतिरिक्त केन्द्र पर उपलब्ध 06 पॉलीहाउस में ड्रिप सिंचाई एवं 02 पॉलीहाउस में फॉगर द्वारा भी सिंचाई की जा रही है। जिले के कृषकों की आवश्यकता एवं माँग के अनुसार सब्जियों के उन्नतशील पौध उत्पादन हेतु उत्तराखण्ड शासन के माध्यम से रु. 15 लाख की परियोजना केन्द्र को स्वीकृत की गयी है। इस परियोजना से कृषकों को टमाटर, शिमलामिर्च, बैंगन, पतागोभी आदि सब्जियों की 4.55 लाख पौध चयनित ग्रामों में कृषकों को उपलब्ध करायी गयी है। गिरीदार फलों, कीवी, इलायची एवं अन्य फलों की खेती को बढ़ावा देने के उद्देश्य से समन्वित आजीविका सहायता परियोजना, उत्तराखण्ड के माध्यम से रु. 25 लाख की परियोजना केन्द्र को स्वीकृत हो चुकी है। परियोजना के अंतर्गत केन्द्र पर 02 पॉलीहाउस एवं एक शेड नेट का निर्माण कर दिया गया है। वर्तमान में केन्द्र पर इलायची, स्ट्राबेरी एवं कीवी की मातृ नर्सरी का रोपण कर दिया गया है। शीतोष्ण फलों के उत्पादन हेतु आड़ू के 05 कु. जंगली बीजों का रोपण कर दिया गया है। इस वर्ष इन आड़ू के पौधों पर बादाम, आड़ू, प्लम, खुबानी इत्यादि के उन्नतशील पौधों को ग्राफ्ट किया जाना प्रस्तावित है। जिले के जनजातीय क्षेत्रों में कृषि को बढ़ावा देने के उद्देश्य से एक परियोजना चलायी जा रही है। इसमें 05 गाँवों के 150 कृषकों को लाभान्वित किया जा रहा है।

- केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा केन्द्र पर एवं केन्द्र के बाहर क्रमशः 07 एवं 16 प्रशिक्षणों का आयोजन किया गया, जिसमें 154



सब्जी पौध उत्पादन पर प्रशिक्षण

- एवं 335 प्रशिक्षणार्थियों ने प्रतिभाग किया। ग्रामीण बेरोजगारों के लिए 01 रोजगारपरक प्रशिक्षण का आयोजन किया गया, जिसके द्वारा 10 प्रशिक्षणार्थी लाभान्वित हुए। 04 प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रसार कार्यकर्ताओं के लिए आयोजित किया गया जिसमें 72 कृषकों ने प्रतिभाग किया। केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा विगत त्रैमास में कृषकों के प्रक्षेत्र पर 83 भ्रमण किए गये, जिसके द्वारा 689 कृषक लाभान्वित हुए। केन्द्र पर जानकारीयाँ प्राप्त करने हेतु 188 किसानों द्वारा भ्रमण किया गया और केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा कृषि संबंधी समस्याओं का समाधान एवं कृषि उत्पादन की नवीनतम जानकारी प्राप्त की गयी। केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा 21 गोष्ठियों में प्रतिभाग किया गया, जिसमें 1569 कृषक लाभान्वित हुए। केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा दैनिक समाचार पत्र अमर उजाला व दैनिक जागरण में 02 तकनीकी समाचारों को प्रकाशित किया गया। केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा कृषकों की जानकारी हेतु 01 लेख प्रकाशित किया गया।
- केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन में धान-3.0 है., मंडुआ 1.0 है., सोयाबीन-3.0 है., सोयाबीन (टी.एस.पी. के अंतर्गत)-1.0 है., चना-0.5 है., लोबिया-1.0 है., टमाटर-0.5 है., पत्तागोभी-0.5 है., फ्रासबीन-0.5 है., बरसीम-0.5 है. एवं जई-0.5 है. में लगाये गये। इसके अतिरिक्त 14 परिवारों के 45 बकरियों एवं 09 परिवारों के 25 दुधारु पशुओं को प्रदर्शन के अंतर्गत खनिज-मिश्रण वितरित किया गया है।

### कृषि विज्ञान केन्द्र, काशीपुर (ऊधमसिंहनगर)

- विगत त्रैमास में केन्द्र एवं केन्द्र के बाहर कुल 12 प्रशिक्षण का आयोजन किया गया, जिसमें कुल 303 प्रशिक्षणार्थियों ने प्रतिभाग किया। मत्स्य प्रसंस्करण, खाद्य पदार्थ के सुरक्षित भण्डारण एवं मूल्यवर्धन, बिस्कुट / केक बनाना, महिलाओं एवं बच्चों की देखाभाल, स्वच्छता का महत्व, हल्दी प्रसंस्करण, सोयाबीन प्रसंस्करण, मछली बीज परिवहन तकनीकी, धान में खरपतवार नियंत्रण, बासमती धान, खाद्य पदार्थ के मूल्यवर्धन विषय पर आयोजित किये गए।
- जनपद के विभिन्न ग्रामों में सस्य विज्ञान, मत्स्य पालन, उद्यान एवं गृह



प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

विज्ञान की नवीनतम तकनीकियों पर 4.7 है। कृषक प्रक्षेत्र पर 51 अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन लगाए गए। साथ ही 15 कृषक प्रक्षेत्रों पर मत्स्य सम्बन्धित एवं पौष्टिक आटे के द्वारा महिलाओं के पोषण स्तर में सुधार हेतु कृषक प्रक्षेत्र पर परीक्षण आयोजित किये गये।

- केन्द्र के प्रभारी अधिकारी, डा. सी. तिवारी द्वारा नार्म, हैदराबाद द्वारा आयोजित अगस्त 25, 2016 से सितम्बर 03, 2016 तक आई.सी.टी. एप्लीकेशन फॉर एग्रीकल्चर एक्सटेंशन एवं सितम्बर 08, 2016 को अटारी, कानपुर पर दलहन फसलों की समीक्षा बैठक में प्रतिभाग किया गया। केन्द्र के मत्स्य वैज्ञानिक, डा. एस.के. शर्मा द्वारा एक्टैन्शन मेथडोलोजी फॉर फिशरीज पर्सनल विषय पर जुलाई 27-30, 2016 एवं प्रतिभा सिंह, विषय वस्तु विशेषज्ञ (गृह विज्ञान) के द्वारा वोमन इम्प्रावरमेन्ट एवं जेन्डर सेन्सिटाइजेशन विषय पर जुलाई 12-15, 2016 तक प्रसार प्रशिक्षण संस्थान, नीलोखेड़ी द्वारा आयोजित कार्यशाला में प्रतिभाग किया गया। श्री सतीश कुमार द्वारा 20-23, 2016 तक सफलता की कहानी लिखने हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रम में भारतीय मृदा एवं जल संरक्षण संस्थान, देहरादून में प्रतिभाग किया गया।
- केन्द्र के मत्स्य वैज्ञानिक, डा. एस.के. शर्मा को गार्ड सोसाइटी एवं जेड.एम.डी. एजुकेशनल सोसाइटी तेलंगाना द्वारा यंग साइन्टिस्ट पुरस्कार से सम्मानित किया गया।
- केन्द्र द्वारा संचालित किये जा रहे प्रसार कार्यक्रमों के अन्तर्गत 68 प्रक्षेत्र भ्रमण कर 416 किसानों की समस्याओं का समाधान किया गया एवं व्यावहारिक तकनीकी जानकारी प्रदान की गई।
- केन्द्र द्वारा 01 शोध पत्र एवं 12 समाचार पत्रों में खबरें प्रकाशित की गई तथा 02 वैज्ञानिकों की वार्ता डी.डी. किसान, नई दिल्ली द्वारा रिकार्डिंग की गई।

### समेटी-उत्तराखण्ड द्वारा आयोजित प्रशिक्षण

राज्य कृषि प्रबन्धन एवं प्रसार प्रशिक्षण संस्थान, उत्तराखण्ड (समेटी-उत्तराखण्ड) द्वारा विगत त्रैमास में राज्य के प्रगतिशील कृषकों, फार्म स्कूल संचालक, उद्यान निरीक्षक, एच.टी.एम. सदस्य, पशुपालन विभाग के कर्मचारी एवं अधिकारी, ब्लाक तकनीकी प्रबन्धक (बी.टी.एम.) हेतु प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना; शीतोष्ण एवं नीबू वर्गीय फलोत्पादन: तकनीकी एवं मूल्यवर्धन तथा दुग्ध उत्पादन एवं दुधारु पशुओं का प्रबन्धन विषयक 03 प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों के द्वारा कुल 75 प्रशिक्षणार्थी लाभान्वित हुए।

### प्रशिक्षण एवं भ्रमण इकाई द्वारा आयोजित प्रशिक्षण/भ्रमण

प्रसार शिक्षा निदेशालय के प्रशिक्षण एवं भ्रमण इकाई द्वारा विगत त्रैमास में विभिन्न सरकारी विभागों, स्वयं-सेवी संस्थाओं, निजी एवं सार्वजनिक फर्मों तथा परियोजनाओं द्वारा प्रायोजित कुल 14 प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। आयोजित किये गये यह प्रशिक्षण पशुपालन, कुक्कुट पालन, भूमि एवं जल संरक्षण, मशरूम उत्पादन, कृषि प्रौद्योगिकी एवं कृषि विविधीकरण आदि से सम्बन्धित थे। इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों से 381 प्रशिक्षणार्थी लाभान्वित हुए। अधिकांश प्रशिक्षण तीन दिवसीय से लेकर सात दिवसीय थे। प्रशिक्षण एवं भ्रमण कार्यक्रम का संचालन प्राध्यापक एवं प्रभारी प्रशिक्षण डा. एस.के. बंसल द्वारा किया गया।

## आगामी त्रैमास में कृषकों हेतु महत्वपूर्ण बिन्दु

### कृषि हेतु-

- राई एवं सरसों की बोआई अक्टूबर के प्रथम पखवाड़े तक अवश्य पूरा कर लें।
- असिंचित क्षेत्रों में चना, मटर, मसूर की बोआई अक्टूबर माह के तृतीय सप्ताह तक एवं सिंचित क्षेत्रों में नवम्बर के प्रथम पखवाड़े तक तथा पर्वतीय क्षेत्रों में अक्टूबर से मध्य नवम्बर तक अवश्य कर लें।
- मैदानी एवं निचले पर्वतीय असिंचित क्षेत्र में गेहूँ की बोआई अक्टूबर के द्वितीय पखवाड़ें में एवं ऊंचे पर्वतीय क्षेत्रों में अक्टूबर के प्रथम सप्ताह तथा सिंचित क्षेत्रों में नवम्बर में करें।
- पर्वतीय क्षेत्रों में अक्टूबर के मध्य से नवम्बर के प्रथम सप्ताह तक मसूर की बोआई करें।
- आलू, मूली, गाजर, शलजम, लहसुन की बोआई अक्टूबर माह में करें।
- पुष्प गुच्छ रोग की रोकथाम हेतु अक्टूबर माह में आम के बाग में नैथलीन एसिटिक एसिड (200 पीपीएम) का छिड़काव करें एवं नवम्बर माह में मीली बग से बचाने के लिए वृक्षों पर पालीथीन की 30 से.मी. चौड़ी पट्टी गोलाई में बांधकर दोनों सिरों पर ग्रीस लगायें तथा प्रति वृक्ष थालों एवं तनों पर क्लोरोपाइरीफॉस 5 प्रतिशत धूल की 200-250 ग्रा. मात्रा का बुरकाव करें।
- अक्टूबर माह में नींबू वर्गीय फल, आंवला, करौदा, कटहल, अमरुद, नाशपाती में रस्ट की रोकथाम हेतु ब्लाइटाक्स 50 (0.25 प्रतिशत) का छिड़काव करें।
- आड़ू, आलूबुखारा एवं खुबानी में जड़ छेदक कीट की रोकथाम हेतु क्लोरोपाइरीफॉस (4 मि.ली./10 लीटर पानी में) का घोल बनाकर थालों में सिंचाई करें।

### पशुपालन एवं अन्य हेतु-

- पशुओं के छोटे बच्चों को कृमि रहित करने हेतु पिपराजीन या अन्य दवा चिकित्सक की परामर्श अनुसार दें।
- माह नवम्बर एवं दिसम्बर में पशुओं को ठण्ड से बचाव हेतु पशुशाला पर पर्दे लगायें। अक्टूबर एवं नवम्बर माह में भैंस गरमी में आती है अतः ध्यान दें। गाभिन भैंसों को अधिक खनिज लवण दें।
- पशुओं को चर्मरोग से बचाने हेतु सूखे खुरारे का प्रयोग करें।
- मुर्गी घरों के बिछावन को दिन में 2-3 बार पलटते रहें ताकि वह सूखता रहे।
- मुर्गियों से अधिक अण्डा प्राप्त करने हेतु दिन और रात की कुल रोशनी 16 घण्टे बनाएं रखें। जैसे-जैसे दिन छोटे होते जाएं रात की रोशनी बढ़ाते जाएं।
- मत्स्य तालाब में अक्टूबर/नवम्बर माह में खाद व उर्वरक का प्रयोग करें। मछलियों को पर्याप्त मात्रा में परिपूरक आहार दें। अवांछनीय जलीय जीव जन्तुओं को निकालते रहें।

## एकल खिड़की पद्धति से कृषक सेवा

प्रसार शिक्षा निदेशालय के अन्तर्गत कार्यरत कृषि प्रौद्योगिकी सूचना केन्द्र (एटिक) द्वारा विगत त्रैमास में पन्तनगर कृषक हेल्पलाइन (05944-234810, 05944-235580) एवं किसान कॉल सेन्टर (1800-180-1551 टोल फ्री) के माध्यम से कुल 720 प्रश्न किसानों द्वारा पूछे गये, जिनका समाधान सम्बन्धित विषय के वैज्ञानिकों द्वारा किया गया। देश एवं प्रदेश के विभिन्न स्थानों से आये 831 कृषकों ने एटिक पर भ्रमण किया एवं किसानों द्वारा एटिक से कुल रु. 44,955 के साहित्य एवं रु. 24,660 के धान्य फसलों, दलहनी, तिलहनी, मोटा अनाज एवं सब्जियों के बीजों का क्रय किया गया।

## निदेशक प्रसार शिक्षा डा. वाई.पी.एस. डबास द्वारा विभिन्न वाह्य आयोजनों/बैठकों में प्रतिभाग

- जुलाई 13, 2016 को कृषि विज्ञान केन्द्र, काशीपुर (ऊधमसिंहनगर) में 'निर्यात के लिए बासमती धान के उत्पादन में गुणवत्ता सुधार' विषयक कार्यशाला में प्रतिभाग किया गया। साथ में डा. बी.एस. कार्की, प्राध्यापक सस्य, प्रसार शिक्षा निदेशालय भी उपस्थित थे।
- उत्तर प्रदेश के कासंगज जनपद में एक अतिरिक्त कृषि विज्ञान केन्द्र की स्थापना हेतु स्थल चयन समिति के सदस्य के रूप में अगस्त 19-20, 2016 को भ्रमण किया गया।

## गो.ब. पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय द्वारा विकसित किस्में

कुल विकसित किस्मों की संख्या: 276

अ- क्षेत्र फसलें			
1.	गेहूँ	कल्याण सोना (एस 227), सोनालिका (आरआर 21), यूपी 301, यूपी 319, यूपी 310, यूपी 215, यूपी 262, यूपी 368, यूपी 115, यूपी 2003, यूपी 2121, यूपी 2113, यूपी 1109, यूपी 2338, यूपी 2382, यूपी 2425, यूपी 2565, यूपी 2526, यूपी 2554, यूपी 2572, यूपी 2584, यूपी 2628, यूपी 2684, यूपी 2748, यूपी 2784, यूपी 2785	26
2.	धान	आई आर 24, प्रसाद, गोविन्द, पंत धान 4, मनहार, पंत धान 6, पंत धान 10, पंत धान 11, पंत धान 12, पंत संकर धान 1, पंत मझेड़ा धान 7, पंत धान 16, पंत सुगंध धान 15, पंत सुगंध धान 17, पंत अंकुर धान 3, पंत धान 18, पंत धान 19, पंत सुगंध धान 21, पंत धान 22, पंत धान 23, पंत सुगंध धान 23, पंत सुगंध धान 25, पंत धान 26, पंत सुगंध धान 27	24
3.	मक्का	प्रोटिना, तरुन, नवीन, स्वेता, कंचन, डी 765, सूर्या, गौरव (डी 981), अमर (डी 941), प्रगति (डी 994), पंत संकर मक्का 1, पंत संकर मक्का 2, पंत संकर मक्का 3, पंत संकर मक्का 4	14
4.	जौ	पीआरबी 502, पीआरबी 701 (रानीचौरी), यूपीबी 1008	03
5.	दलहनी	यूपीएस 120, पंत अरहर 291, पंत अरहर 3 (अरहर), पंत जी 114, पंत जी 186, सदभावना, सूर्या,	49

		डब्ल्यूसीजी 10, पंत ग्राम काबुली 1, पंत ग्राम काबुली 2, पंत एल 406 पंत एल 234, पंत एल 639, पंत एल 4, पंत एल 5, पंत एल 6, पंत एल 7, पंत एल 8, पंत एल 9 (मसूर), पंत मूंग 1, पंत मूंग 2, पंत मूंग 3, पंत मूंग 4, पंत मूंग 5, पंत मूंग 6, पंत मूंग 7, पंत मूंग 8, पंत उर्द 6, पंत उर्द 19, पंत उर्द 30, पंत उर्द 31, पंत उर्द 35, माणिक्या, पंत उर्द 40, पंत मटर 5, पंत मटर 13, पंत मटर 14, पंत मटर 25, पंत मटर 42, पंत मटर 74, पंत मटर 86, पंत मटर 96, पंत मटर 108, पंत मटर 155, पंत मटर 157, पीआरआर 1, पीआरआर 2 (राइस बीन), पंत ग्राम 3, पंत ग्राम 4	
6.	लोबिया	पंत लोबिया 1, पंत लोबिया 2, पंत लोबिया 4, पंत लोबिया 5	04
7.	सोयाबीन	ब्राग, अंकुर, अलंकार, शिलाजीत, पीके 262, पीके 327, पीके 308, पीके 416, पीके 472, पीके 564, पंत सोयाबीन 1024, पंत सोयाबीन 1042, पीएस 1029, पंत सोयाबीन 1092, पंत सोयाबीन 1241, पीआरएस 1, पंत सोयाबीन 1347, पंत सोयाबीन 1225, पंत सोयाबीन 19, पंत सोयाबीन 20, पंत सोयाबीन 21, पंत सोयाबीन 22, पंत सोयाबीन 23	23
8.	तिलहनी	क्रांति (पीआर 15), कृष्णा (पीआर 18) (सरसों), पीटी 30, पीटी 303, पीटी 507, पीटी 2002-25 (उत्तरा) (तोरिया), पंत हिल तोरिया 1, किरन (राई), पंत पीली सरसों 1 (पीली सरसों), पंत स्वेता, पंत राई 19, पंत राई 20, पंत राई 21, पीटी 508	14
9.	मोटे अनाज	पीईएस 176, पीईएस 110, पंत मंडुवा 3, पीआरएम 1, पीआरएम 2, (रानीचौरी) (फिंगर मिलेट), पंत सेतारिया 4, पीआरके 1 (फॉक्सटेल मिलेट), पीआरए 1, पीआरए 2, पीआरए 3 (ग्रीन अमरनाथ), पीआरजे 1 (झिंगोरा), पीआरसी 1 (पीआरसी 407) (प्रोसो मिलेट)	12
10.	बक व्हीट	पंत रानी बक व्हीट 1	01
11.	चारा फसलें	यूपी चारी 1, यूपी चारी 2, पंत चारी 3, पंत चारी 4, पंत चारी 5, पंत चारी 6, पंत चारी 7, पंत चारी 8, पंत चारी 9, सीएसएच 20 एमएफ, सीएसएच 24 एमएफ (सौरघम), यूपीसी 5286, यूपीसी 5287, यूपीसी 287, यूपीसी 4200, यूपीसी 8705, यूपीसी 9202, यूपीसी 607, यूपीसी 618, यूपीसी 622, यूपीसी 621, यूपीसी 625, यूपीसी 628, यूपीबी 110 (बरसीम), यूपीओ 94, यूपीओ 212, यूपीओ 06-1 (ओट)	27
12.	गन्ना	को पंत 84211, को पंत 84212, को पंत 90223, को पंत 94211, को पंत 96219, को पंत 97222, को पंत 99214, को पंत 3220, को पंत 05224	09
13.	चुकन्दर	पंत एस 10	01
14.	कपास	श्यामली, प्रमुख, लोहित	03
15.	ढैंचा	पंत ढैंचा 1 (पी एसईएस 1)	01

### ब- सस्य वानिकी/वृक्ष

1.	पोपलर	पंत पोपलर 5	01
<b>स- फ्रूट्स एण्ड औरनामेंटल फसलें</b>			
1.	नाशपाती	पंत नाशपाती 3, पंत नाशपाती 17, पंत नाशपाती 18	03
2.	आम	पंत सिंदुरी, पंत चन्द्रा	02
3.	कटहल	पंत महिमा, पंत गरिमा	02
4.	अमरुद	पंत प्रभात	01
5.	आंवला	पंत आंवला 1	01
6.	पपीता	पंत पपीता 1, पंत पपीता 2	03
7.	बेल	पंत अपर्णा, पंत शिवानी, पंत सुजाता, पंत उर्वशी	04
8.	सिट्रस	पंत नीबू 1	01
9.	करौंदा	पंत मनोहर, पंत सुर्दशन, पंत सुवर्णा	03
10.	आडू	पंत आडू 1	01
11.	प्लम	पंत प्लम 1, पला 12	02
12.	ग्लैडियोलस	सुभागिनी	01
<b>द- सब्जियाँ एवं मसालें</b>			
1.	मिर्च	पंत सी 1	01
2.	बैंगन	पंत सम्राट, पंत रितुराज, पंत बैंगन हाईब्रिड 1, पंत बैंगन 4	04
3.	टमाटर	पंत बहार, पंत टमाटर 3, पंत पॉलीहाउस टमाटर 2, पंत पॉलीहाउस टमाटर 1	04
4.	फूलगोभी	पंत सुभ्रा, पंत गोभी 2, पंत गोभी 3, पंत गोभी 4	04
5.	राजमा	पंत अनुपमा, पंत बीन 2	02
6.	मटर	पंत उपहार, पंत मटर 2, पंत सब्जी मटर 3, पंत सब्जी मटर 4, पंत सब्जी मटर 5	05
7.	धनिया	पंत हरितमा	01
8.	करेला	पंत करेला 1, पंत करेला 2, पंत करेला 3	03
9.	तोरई	पंत तोरई 1	01
10.	लौकी	पंत संकर लौकी 1, पंत संकर लौकी 2, पंत लौकी 3, पंत लौकी 4	04
11.	खीरा	पंत संकर खीरा 1, पंत खीरा 1, पंत पारथिनोकारपिक खीरा 2, पंत पारथिनोकारपिक खीरा 3	04
12.	पेठा	पंत पेठा 1 (पीजीए 72)	01
13.	लम्बे तरबूज	पंत ककड़ी 1	01
14.	लहसुन	पंत लोहित	01
15.	हल्दी	पंत पिताभ	01
16.	सौंफ	पंत मधुरिका	01
17.	मेथी	पंत रागिनी	01
18.	ब्लेक क्यूमिन	पंत कृष्णा	01
19.	अजवाइन	पंत रुचिका	01

## निदेशक की कलम से



कृषि के क्षेत्र में सूचना प्रौद्योगिकी का बहुत तेजी से प्रयोग बढ़ रहा है। गांवों में कृषि से सम्बन्धित नवीनतम जानकारी के लिए ई-चौपाल केन्द्रों की तेजी से स्थापना हो रही है। इसके अतिरिक्त ई-चौपाल केन्द्र ग्रामीण विकास में भी अपनी भूमिका निभा रहे हैं। ये ई-चौपाल पशुधन सम्बन्धी जानकारी, नस्ल सुधार, दुग्ध उत्पादन बढ़ाने, जल संरक्षण, स्वयं सहायता समूहों के विकास के लिए भी कार्य रहे हैं। सूचना प्रौद्योगिकी आज हर उद्यम का अभिन्न अंग बन चुकी है। ई-कामर्स व्यापार और वाणिज्य की आन-लाईन लेन-देन की कुशल प्रक्रिया है। आज के दौर में किसान कॉल सेन्टर बदलते ग्रामीण भारत की नई तस्वीर प्रस्तुत कर रहे हैं। किसान कॉल सेन्टर का मुख्य उद्देश्य टेलीफोन कॉल पर किसानों के प्रश्नों का जवाब देना है। ये कॉल सेन्टर राज्य व केन्द्र शासित प्रदेशों के 14 विभिन्न स्थानों में कार्यरत हैं। कॉल सेन्टर सेवाएं सप्ताह के सातों दिन सुबह 6.00 बजे से शाम को 10.00 बजे तक उपलब्ध हैं। देशव्यापी 11 अंकों वाला टोल फ्री नम्बर 1800-180-1551 पर देश के किसी भी कोने से किसान फोन कर कृषि, बागवानी, पशुपालन, मत्स्य पालन, कुक्कुट, मधुमक्खी पालन, रेशम उत्पादन, कृषि अभियांत्रिकी, कृषि विपणन, जैव प्रौद्योगिकी, गृह विज्ञान से सम्बन्धित अपनी समस्या का समाधान प्राप्त कर सकते हैं। सूचना प्रौद्योगिकी में नैनो तकनीक का भी अभिन्न प्रयोग कृषि, पशुपालन एवं खाद्य प्रसंस्करण में हो रहा है।

भारत में 12 करोड़ से भी अधिक कृषक परिवारों हेतु सूचना एवं तकनीकी आवश्यकताओं के लिए प्रसार तंत्र एक चुनौती बनी हुई है। मई 2014 के ट्राई के आंकड़ों के अनुसार ग्रामीण क्षेत्रों में 38 करोड़ से भी अधिक मोबाइल कनेक्शन हैं। जुलाई 16, 2013 को भारत के मा. राष्ट्रपति द्वारा mkisan वेबसाइट द्वारा एस.एम.एस. पोर्टल लांच किया गया है। mkisan पोर्टल किसानों के लिए उनकी भाषा में कृषि पद्धतियों और स्थान की पसन्द के अनुसार जानकारी/सेवाएं और परामर्श देने के लिए केन्द्रीय और सभी राज्य सरकारों व कृषि के क्षेत्र में संगठनों और सम्बन्धित क्षेत्रों को सक्षम बनाता है। भारत सरकार द्वारा कृषि विस्तार (प्रयोगशाला से खेत तक अनुसंधान विस्तार) के भाग के रूप में राष्ट्रीय ई शासन-कृषि योजना के अन्तर्गत सेवाओं को किसानों तक पहुंचाने के विभिन्न तरीकों की परिकल्पना की गई है। इनमें पिको प्रोजेक्टर और छोटे उपकरणों से सुसज्जित विस्तार कर्मियों की पहुंच के साथ मिलकर विभागीय कार्यालयों में स्क्रीन कियोस्क, एग्री क्लिनिक, निजी खोखे, मास मीडिया, सामान्य सेवा केन्द्र, किसान कॉल सेन्टर और इन्टरनेट शामिल हैं। हालांकि मोबाइल कृषि विस्तार का सबसे शक्तिशाली और सर्वव्यापी साधन

है। मोबाइल पर सूचना प्राप्त करने के लिए किसान अपना पंजीकरण 3 तरह से किसान कॉल सेन्टर पर फोन कर, वेब पंजीकरण अथवा एस.एम.एस. के माध्यम से करा सकते हैं। किसान कॉल सेन्टर के टोल फ्री नम्बर 1800-180-1551 पर कॉल कर मोबाइल का पंजीकरण करा सकता है। इसमें किसान अधिक से अधिक आठ फसलों या गतिविधियों के विकल्प चुन सकता है ताकि उसे अनावश्यक संदेश प्राप्त नहीं हों, जिनमें उनकी रुचि नहीं है। किसान इस एस.एम.एस. सुविधा के लिए किसान कॉल सेन्टर के टोल फ्री नम्बर 1800-180-1551 पर कॉल करके या वेब पोर्टल <http://mkisan.gov.in/hindi/wbreg.aspx>, [www.farmer.gov.in](http://www.farmer.gov.in) पर जाकर या एस.एम.एस. सुविधा द्वारा 51969 या 7738299899 नम्बर पर एस.एम.एस. भेज कर पंजीकृत हो सकते हैं। पंजीकरण हेतु प्रथम बार एस.एम.एस. के लिए शुल्क लिया जाता है जबकि विशेषज्ञों और अधिकारियों से बाद में प्राप्त होने वाले एस.एम.एस. के लिए कोई शुल्क नहीं पड़ता है। एस.एम.एस. भेजने हेतु संदेश बाक्स में टाइप के लिए प्रारूप है- "किसान GOV REG (नाम), (राज्य का नाम), (जिला का नाम), (ब्लॉक का नाम)" (नोट- राज्य, जिला और ब्लॉक के नाम के केवल पहले 3 वर्णों की आवश्यकता होती है)। कृषकों को एस.एम.एस. उनकी पसन्द के अनुसार हिन्दी, अंग्रेजी या क्षेत्रीय भाषा में रोमन स्क्रिप्ट में प्राप्त करने की सुविधा है, यह सुविधा टैक्स्ट एस.एम.एस. एवं वॉइस एस.एम.एस. दोनों तरह की है। इसमें भी कृषि एवं कृषिगत गतिविधियों से सम्बन्धित 08 विकल्प चुनने की सुविधा है। कृषि एवं सहकारिता विभाग, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, पशुपालन, दुग्ध एवं मत्स्य विभाग, भारतीय मौसम विज्ञान विभाग और खाद्यान्न अधिप्राप्ति अभिकरण साथ मिलकर किसानों को एस.एम.एस. प्रसारण हेतु कार्य कर रहे हैं। इस सुविधा का लाभ उठाकर कृषक अत्यन्त लाभान्वित हो सकते हैं। इसके अतिरिक्त [www.farmer.gov.in](http://www.farmer.gov.in) पोर्टल पर विभिन्न कृषि आगतों जैसे- बीज, कीटनाशी, कृषि यंत्र, उर्वरक इत्यादि एवं कृषि बीमा, भण्डारण, कृषि साख, प्रसार गतिविधियों एवं अन्य जानकारीयों एवं योजनाओं के बारे में सूचना प्राप्त की जा सकती है। इसके अतिरिक्त पन्तनगर विश्वविद्यालय में स्थापित कृषि प्रौद्योगिकी सूचना केन्द्र के दूरभाष सं. 05944-234810 पर भी किसान, कृषि से सम्बन्धित अपनी समस्या का समाधान प्राप्त कर सकते हैं।

निष्कर्षतः उत्तराखण्ड में दूरदराज के क्षेत्रों में जहाँ भौतिक सम्पर्क बनाना कठिन है ऐसे क्षेत्रों में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी कारगर भूमिका निभा सकती है। बशर्त आवश्यकता है सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी की सुविधा को अधिकाधिक लोगों तक पहुंचाने की, जिससे शहरों के साथ-साथ गांव के लोग भी पलक झपकते ही सूचनाएं एवं जानकारीयों प्राप्त कर सकें।

  
(वाई0पी0एस0 डबास)

सम्पर्क सूत्र :- डा0 वाई0पी0एस0 डबास, निदेशक प्रसार शिक्षा, गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय  
पन्तनगर-263 145, ऊधमसिंह नगर (उत्तराखण्ड), ☎ 05944-233336 (कार्यालय), 233664 (निवास), Email-dee\_gbpuat@rediffmail.com

विश्वविद्यालय हेल्प लाइन दूरभाष सं0 05944-234810, किसान कॉल सेन्टर निःशुल्क दूरभाष सं0 1800-180-1551

## दृश्य यात्रा



कृषि विज्ञान केंद्रों द्वारा आयोजित प्रशिक्षण, प्रदर्शन एवं भ्रमण कार्यक्रमों की झलकियाँ